Date - 17/07/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. - II (Hons.)

Topic - Descartes - "Cogito ergo sum" theory.

Scanned with CamScanner

देकार्त के "मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ" की व्याख्या।

देकार्त ने संदेह विधि द्वारा आत्मा की सत्ता प्रमाणित की। संदेह करना एक क्रिया है और क्रिया बिना कर्ता संभव नहीं है। अतः संदेह कर्ता के रूप में आत्मा की सत्ता सिद्ध होती है। देकार्त के कथन में "मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ" "Cogito ergo sum" देकार्त का यह प्रथम आधार सत्य है। देकार्त इन्द्रिय जन्य ज्ञान, विज्ञान द्वारा प्राप्त ज्ञान गणित आदि सभी ज्ञान को संशय की दृष्टि से देखते हैं "मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ" यह निर्विवाद निश्चित सत्य है। मैं सोचता हूँ, मैं संशय करता हूँ से ही साक्षात रूप से निष्पादित होता है कि मैं हूँ। इसी ज्ञान के आधार पर देकार्त अपनी दर्शन का संचालन करते हैं।

Cogito ergo sum और इसका स्पष्टीकरण

Cogito ergo sum देकार्त के दर्शन पर आधारित है। Cogito का अर्थ : 'मैं सोचता हूँ' ergo का अर्थ : इसलिए, sum का अर्थ: मैं हूँ। इस अर्थ को दो खण्डों में बांटा गया है।

i) मैं सोचता हूँ

ii) मैं हूँ।

इन दोनों खंडो को जोड़ने के लिए 'इसलिए' का प्रयोग किया जाता है। प्रायः हम समझते हैं कि खंड (क) आधार वाक्य है और खंड, (ख) इसका निष्कर्ष इस तरह यह युक्ति अनुमान का रूप धारण कर लेता है। यह अनुमित सत्यता होती तो यह असंदिग्ध नहीं होता, क्योंकि यदि यह अनुमित सत्यता होती तो अपने आधार वाक्य की सत्यता पर निर्भर करती है। 'इसलिए' (ergo) शब्द का प्रयोग यहां उत्पन्न करता है। Cogito ergo sum 'इसलिए' का प्रयोग इस दूसरे अर्थ में करता है अर्थात 'मैं सोचता हूँ' और मैं हूँ' के बीच अविभाज्य सम्बन्ध है। Cogito ergo sum एक

Scanned with CamScanner

विश्लेषणात्मक वाक्य है, एक स्वयं सिद्ध वाक्य है यह अनुमित सत्य नहीं, बल्कि स्वयं सिद्ध सत्य है। सोचने और सोचने वाले के बीच अनिवार्य का बोध होता है वही 'cogito ergo sum' है।

Cogito का अर्थ 'संकुचित' का द्योतक है। अतः देकार्त का अर्थ चेतनमय प्रक्रिया से है और इसलिए व्यापक अर्थ में चेतन प्रक्रिया में संवेगात्मक एवं इच्छात्मक सभी प्रक्रियाओं का बोध होता है और इससे चेतनात्मक 'मैं' का अस्तित्व अनिवार्य अविभाज्य रूप से जुड़ा रहता है। यहाँ मुख्य बात यह है कि मेरी चेतना में ही मेरा का अस्तित्व निहित है। तीसरी बात यह है कि cogito ergo sum का अर्थ है कि मेरी चेतना या आत्मचेतना इसे अस्तित्ववान सत्ता के रूप में उद्घाटित करती है। चिंतन और चिंतन करने वाले में अविभाज्य संबंध है।

चौथी बात यह है कि cogito द्वारा केवल मेरी सत्ता या अस्तित्व का बोध होता है - यह ज्ञान नहीं होता है कि 'मैं' क्या हूँ। हम बस इतना ही कह सकते हैं कि सोचनेवाला सत्तावान है, अर्थात वह संशय करता है, कल्पना करता है, संवेदना प्राप्त करता है, इच्छा करता है। यह भी कहना संभव नहीं होगा कि मेरा शरीर ही मैं हूँ। जो सोचता है, वही सत्य है। यह निश्चित है कि सोचना या चिंतन करना तब तक संभव नहीं है जब तक कोई सोचनेवाला चिंतन करनेवाला न हो।

देकार्त के दर्शन में cogito ergo sum का महत्व और भूमिका :-
सबसे पहले यह विचारणीय है कि क्यों cogito ergo sum को असंदिग्ध अकाट्य सत्य माना जाता है। Cogito, 'sum' इसलिए सत्य है कि ये स्पष्ट और परिस्पष्ट है। स्पष्ट वह है, जिसका अर्थ या बोध साफ-साफ दिखाई पड़ता है, और परिस्पष्ट वह है, जिसका बोध इतना निश्चित होता है कि उसे किसी अन्य बातों से मिल जाने का खतरा न हो। इसलिए वे सभी बातें जो cogito ergo sum के समान स्पष्ट और परिस्पष्ट हैं उन्हें भी सत्य माना जाता है। सत्यता की कसौटी 'स्पष्टता एवं परिस्पष्टता' के cogito ergo sum में ही निःसृत होती है। सत्यता की कसौटी को काम में लाने के पहले हमें इसके स्वरूप को जानना चाहिए।

Scanned with CamScanner

हो सकता है कि वे सत्यता की कसौटी को भी उसी अन्तर्भूत के आधार पर स्थापित करनी चाहिए जिसके द्वारा cogito ergo sum की स्थापना कि है।

सत्यता की कसौटी स्पष्टता और परिस्पष्टता दर्शा कर डेकार्ट ने अपने दर्शन में विभिन्न सिद्धांतो को स्थापित किया। जो स्वतः स्पष्ट हो एवं जो स्वयं सिद्ध हो, वही निश्चित, निर्विवाद सत्य है, cogito ergo sum स्वतः स्पष्ट एवं स्वयंसिद्ध है। मेरा अस्तित्व मेरे ~~विवेक~~ चिंतनशील होने के कारण निर्विवाद सत्य है किन्तु मैं क्या हूँ? डेकार्ट का उत्तर है कि 'मैं वह हूँ जो चिन्तन करता है, वह वस्तु जो संशय करता है जो समझता है, जो धारण करता है, जो स्वीकार करता है, निषेध करता है, इच्छा करता है, कल्पना करता है, वही मैं हूँ। वह आत्मा ही है, एक आध्यात्मिक द्रव्य है जिसका प्रधान गुण चेतन या विचार है।

स्पष्टता और परिस्पष्टता विचार की प्राप्ति इन्द्रिय प्रत्यक्ष द्वारा नहीं होता क्योंकि इसी पर सभी निश्चित एवं सत्य ज्ञान आश्रित है, इसलिए इसका स्रोत जन्म-जात प्रत्यय हो सकता है। इस सिद्धांत को सत्य इन्द्रिय जन्य प्रत्ययों से श्रेष्ट माना गया था। जन्मजात प्रत्यय डेकार्ट के अनुसार जन्म से ही मन में रहता है। शिशुओं का जन्म इन प्रत्ययों को ग्रहण करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति के साथ होता है। जन्मजात प्रत्यय, ~~बाह्य~~ बाह्य जगत से ~~उत्पन्न~~ उत्थित एवं स्वनिर्मित प्रत्ययों से भिन्न है।

Cogito ergo sum विचार एवं विचार के बीच अवियोज्य संबंध प्रदर्शित करता है। डेकार्ट ने इस संबंध को इतना स्पष्ट और परिस्पष्ट माना कि उन्होंने इसे निश्चित, निर्विवाद ज्ञान का उच्चतम आदर्श के रूप में दार्शनिको के समक्ष रखा। सत्यता की कसौटी के आधार पर डेकार्ट ने पहले ईश्वर की सत्ता का प्रतिपादन किया। ईश्वर की सत्यनिष्ठा का प्रतिपादन कर इससे बाह्य जगत के अस्तित्व को प्रमाणित किया। विचार से विचारक का अस्तित्व निरूपादित करना कुछ आलोचको की दृष्टि से गलत है। विचार या बोध मानसिक प्रक्रिया है और विचारक एक तत्व है। एक स्थायी आत्मा है, कोई विचार या बोध नहीं। 'चिन्तये से', मैं चिंतन करता हूँ, से हम यह निरूपित करते है

डेकार्ट जिस स्पष्टता और परिस्पष्टता की बात को सत्यता की कसौटी के सम्बंध में करते हैं, वह 'मनोवैज्ञानिक' कसौटी है। किसी पागल व्यक्ति को स्पष्टता और परिस्पष्टता के रूप में मालूम हो कि कोई उसे नाम लेकर पुकार रहा है, तो क्या पागल के इस ज्ञान को सत्य माना जाता है अथवा किसी व्यक्ति के मरुभूमि के पानी का भ्रम उत्पन्न करना और उसे यह ज्ञान स्पष्टता और परिस्पष्टता दिखती तो क्या इस जलाशय के भ्रम को भी सत्य माना जाएगा?